महत्वपूर्ण एवं खास

उम्मीद से कम

वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु द्वारा पेश किया गया लगातार चौथा बजट कोई ऐसी उम्मीद तो नहीं जगाता कि हरियाणा की फिजा में परिवर्तनकारी बयार बहेगी, मगर एक बात तो तय है कि बजट लोकलुभावन नहीं है। इसका राजनीतिक निष्कर्ष यह है कि हरियाणा सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी। कयास लगाये जा रहे थे कि हरियाणा में भी आम चुनाव के साथ चुनावी दांव चला जा सकता है। लगता है अब सरकार अपने आखिरी बजट को चुनावी बजट का रूप देगी और तमाम कसमें-वायदे किये जायेंगे। वर्ष 2018-19 के बजट में न कोई नये कर हैं और न ही कोई बड़ी राहत। सामान्य व्यक्ति की नजर में बजट आंकड़ों की बाजीगरी ही है। कुल आय के बराबर ही खर्च है। राजस्व घाटा 8253 करोड़ का है। ले-देकर उदय योजना के तहत उन पावर कंपनियों को राहत दी गई है जो लाइन लास व अन्य कारणों से भारी घाटा उठा रही थीं। इस कर्ज को अधिगृहीत कर सरकार ने ऋण की ब्याज दर कम करके कंपनियों को राहत दी लेकिन बत्तीस हजार करोड़ के अधिभार से राज्य के ऋण भार में खासी वृद्धि हुई है। सत्ता में आने पर सरकार का जो ऋण भार 70931 करोड़ रुपये था, वह अब बढ़कर एक लाख इकसठ हजार करोड़ से अधिक हो गया है। केंद्र सरकार की तर्ज पर राज्य सरकार ने भी कृषि केंद्रित नीति को आगे बढ़ाया है। किसानी के बजट में 51 फीसदी यानी डेढ़ गुना की वृद्धि की गई है। एसवाईएल के लिये फिर सौ करोड़ का बजट रखा गया है। यानी मुद्दा राजनीतिक तौर पर सरगर्म रहेगा।छूट के नाम पर प्राकृतिक गैस सस्ती हुई है, जिसके उपयोगकर्ताओं का दायरा सीमित है। मनोहर सरकार के बजट में कई अंतर्विरोध भी नजर आते हैं। राज्यपाल के अभिभाषण में कमजोर वर्ग के लिये जिस मनोहर ज्योति योजना का उल्लेख किया गया था, उसका बजट में जिक्र नहीं है। विडंबना देखिये कि राज्य की खेल प्रतिभाएं ओलंपिक से लेकर तमाम विश्व स्पर्धाओं में देश का नाम रोशन कर रही हैं, मगर बजट भाषण में खेलों को लेकर किसी विशेष योजना का जिक्र ही नहीं है।

खुलती खिड़कियां

भारत और पाक के रिश्ते बहुत चौंकाने वाले उतार-चढ़ावों से गुजर रहे हैं। अब जम्मू-कश्मीर की सीमा पर तनावपूर्ण हालात के चलते पाक के साथ रिश्तों में आई तल्खी और बेरुखी को दरकिनार करते हुए मानवीय आधार पर भारत की ओर से अचानक की गई पहल इनमें से एक है। इस प्रस्ताव को पाकिस्तान द्वारा स्वीकार करना भी उतना ही आश्चर्यजनक है। नियमित राजनीतिक-कूटनीतिक रिश्तों के अभाव में अवाम खासकर महिलाओं और बुजुर्गों को पेश आने वाली समस्याओं पर गौर करने के पीछे किसकी प्रेरणा काम कर रही है, यह समझना कुछ खास कठिन नहीं है। दरअसल, अमेरिका भारतीय उपमहाद्वीप में अपने भू-राजनीतिक प्रभुत्व को वापस पाने की कोशिशों में लगा है। वाशिंगटन ने तिब्बत और भारत के बीच के देशों और हिंद महासागर के द्वीप राष्ट्रों को लेकर बीजिंग के मुकाबले पूरी ताकत से खड़े होने के लिये परोक्ष मदद देने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है पर अफगानिस्तान-पाकिस्तान विवाद से जुड़े मामलों को अपने हाथ में रखा है। भारत-पाक के बीच तनाव कम करने में अमेरिका की रुचि स्वाभाविक है। उसने तालिबान से शांति की पेशकश की है और पाकिस्तान के साथ थोड़ी गर्मजोशी दिखाते हुए उसे अपनी सेना के एक बड़े हिस्से को अफगानिस्तान की सीमा पर लगाने को कहा है, जिससे कि बातचीत में रोड़ा बन रहे आतंकवादियों को नियंत्रित किया जा सके। अफगानिस्तान में चल रहे कूटनीतिक खेल में सफलता के लिए भारत-पाक सीमा पर शांति आवश्यक है।

उधार का घी, मिलीभगत की खिचड़ी

देखिए नेता और अफसर का मेल ऐसा ही होता है जैसे घी-शक्कर या घी-खिचड़ी का। लार टपकाने की जरूरत नहीं क्योंकि यहां न घी है और न ही शक्कर। बातों के पकौड़े हैं और पकौड़ों का जिक्र तो बिल्कुल भी नहीं होगा। बहरहाल, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि घी अगर उधार का मिल रहा हो तो वे न शक्कर का इंतजार करते हैं और न ही खिचड़ी का। बात-बात पर भारतीय संस्कृति को तकलीफ देने वालों और वेद-पुराणों को उद्धृत करने वालों को यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे यहां ऋण लेकर घी पीने का भी खूब गुणगान हुआ है। चाहें तो सारे बैंक डिफाल्टर और बैंक अधिकारी इस उद्धरण का सहारा ले सकते हैं। खैर, जिस तरह से बैंकों के घोटाले सामने आ रहे हैं, उसके बाद यह बताने की जरूरत तो बिल्कुल भी नहीं है कि उधार का घी कौन पी रहा है। बड़े लोग हैं भाई, इसलिए सेहत का ख्याल रखते हैं और शक्कर से बचते हैं। शूगर हो जाने का खतरा होता है न। हालांकि खिचड़ी तो स्वास्थ्यवर्धक मानी गयी है और पिछले दिनों तो रामदेव बाबा ने भी सार्वजनिक रूप से खिचड़ी पकाकर इस दावे पर अपनी मोहर भी लगा दी। आजकल उनकी मोहर लगते ही हर उत्पाद न सिर्फ स्वास्थ्यवर्धक हो जाता है, बल्कि उसमें देशभक्ति का छौंक भी लग जाता है। और खिचड़ी तो वैसे भी मिलीभगत का ही नाम है। बिना मिलीभगत के खिचड़ी पकती ही नहीं। फिर भी कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाते रहते हैं। जो भी हो पर नेता-अफसर के मेल को चोली-दामन का साथ भी कह सकते हैं। कुछ लोग तो नेताओं और अफसरों के साथ ठेकेदारों को मिलाकर नेक्सस ही बना देते हैं। हिंदी में इसे तीन तिलंगों के अलावा और क्या कहेंगे। अब वे तीन-तेरह तो हो नहीं सकते। इससे पिटने का खतरा ज्यादा होता है। दिल्ली में हुए तो देखिए पिटने की शिकायत सामने आ गयी न। अफसर कह रहे हैं कि नेताओं ने पीटा। नेता कह रहे हैं कि हमें भी पीटा। पीटने वाले लगता है कर्मचारी ही थे। विपक्षी नेताओं को मौका लग रहा है तो वे सरकार चलाने वाले नेताओं को पीटने की फिराक में हैं। यह तो अच्छा है कि दिल्ली में विपक्ष वालों की तादाद उतनी नहीं, वरना तो सदन में कुर्सियां चलने की भी पूरी संभावना रहती। जूते भी चल सकते थे। भैया जूतों में दाल बंटती है। घी-शक्कर या घी-खिचड़ी नहीं बंटते। भलाई घी-शक्कर या घी-खिचड़ी होने में ही है और ज्यादा करो तो चोली-दामन वाला साथ ले लो। तीन-तेरह रहने में कोई फायदा नहीं। पिटने का डर अलग से।

नेपाल को ग्वादर से जोड़ने का शातिर खेल

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शाहिद खक़ान अब्बासी क्या दक्षेस की मज़बूती के वास्ते नेपाल गये थे दिल्ली दरबार में तो लगता है, कोई ख़ास बात नहीं है। ऐसा चलता रहता है। मगर, चीनी सत्ता प्रतिष्ठान ने जिस मकसद से पाक पीएम अब्बासी को 4 और 5 मार्च को काठमांडो भेजा था, उसकी कुछ झलकियां ग्लोबल टाइम्स और पीपुल्स डेली में टिप्पणी के रूप में नुमायां हुई हैं। सोचिए कि नेपाल के प्रधानमंत्री ओली ने अपने पाक समकक्ष शाहिद खक़ान अब्बासी के रेड कार्पेट वेलकम के वास्ते यही वक्त क्यों चुना भारत की घरेलू राजनीति में बढ़ रही बदअमनी और बीजेपी नेतृत्व को ऐसे विषयों में व्यस्त देखते हुए, क्या केपी शर्मा ओली एक बड़े खेल के विस्तार में लग गये हैं 24 साल के लंबे अंतराल के बाद पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अब्बासी का नेपाल आना हुआ है। पीएम अब्बासी से पहले, 1994 में बेनज़ीर भुट्टो नेपाल आई थीं। बेगम भुट्टो उभयपक्षीय संबंधों को मज़बूत करने के वास्ते नेपाल दौरे पर गई थीं। वर्ष 2014 में 18वें दक्षेस शिखर सम्मेलन के समय तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ काठमांडो आये थे। उस समय नेपाल के पीएम सुशील कोइराला थे, जिन्होंने प्रधानमंत्री मोदी और नवाज शरीफ जैसे दो रूठे दोस्तों को मनाने में बड़ी

भूमिका निभाई थी। चार साल के भीतर नेपाल में रचनात्मक चिंतन वाली लीडरशिप विदा लेती चली गई। अब तोड़फोड़ वाली लीडरशिप आई है, जिसका फायदा पाकिस्तान को मिलने लगा है। काठमांडो के टुंडीखेल ग्राउंड में पाक पीएम को नेपाली सेना की सलामी दी गई। मीडिया को बताया गया कि दक्षेस को और कैसे बेहतर किया जाए, इस पर ओली और अब्बासी बैठेंगे। लेकिन जब दोनों शासन प्रमुख बैठे तो वन बेल्ट वन रोड (ओबीओआर) पर बात होने लगी। चाइना-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरीडोर की सफलता को कैसे आगे बढ़ाया जाए, यह इस बैठक का कोर एजेंडा था। इससे पहले मई 2017 में तब के पीएम प्रचंड बार्डर रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) पर हस्ताक्षर कर चुके थे। बीआरआई और ओबीओआर एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जिन्हें 2013 में शुरू किया गया। शी जिनपिंग की यह महत्वाकांक्षी परियोजना है, जिसके माध्यम से चीन दुनिया के 68 देशों से सड़क मार्ग के ज़रिये जुड़ना चाहता है। इसका अर्थ है, दुनिया की 65 फीसदी आबादी से अपने हित साधना। सड़क मार्ग के ज़रिये छह अलग-अलग कॉरीडोर बनने हैं। इससे अलग चीन का मेरीटाइम सिल्क रूट समुद्री मार्ग के वास्ते है। अब्बासी ने नेपाल द्वारा बार्डर रोड इनीशिएटिव में शामिल हो जाने पर खुशी का इज़हार किया। अब्बासी ने कहा कि यह पूरे दक्षिण एशिया के लिए 'गेम चेंजर' साबित होगा। अब्बासी बोले, 'नेपाल ग्वादर पोर्ट का इस्तेमाल कर सकता है।' भूपरिवेष्ठित नेपाल के लिए यह ऑफर मानो अंधे के हाथ बटेर लगने जैसा है। प्रधानमंत्री अब्बासी ने वह रोड मैप दे दिया है, जिसके ज़रिये नेपाल को ग्वादर तक पहुंचना है। इसके लिए खेरूंग-तिब्बत मेन रेल लाइन सबसे बड़ा संपर्क मार्ग है। सवाल यह है कि बिना चीन के सिग्नल के पाक प्रधानमंत्री इस तरह का रोड मैप कैसे दे सकते हैं यह पेइचिंग द्वारा प्रायोजित योजना का यह हिस्सा है, जिसमें पाक प्रधानमंत्री अब्बासी को काठमांडो जाकर यह सब बताना था। पाकिस्तान की कूटनीतिक कुंठा दक्षेस को लेकर भी है। 15-16 नवंबर 2016 को 19वां सार्क समिट इस्लामाबाद में होना था। मगर, उरी हमले से बात इतनी बिगड़ गई कि भारत ने सम्मेलन में जाने से मना कर दिया, देखा-देखी मालदीव, अफगानिस्तान, भूटान, बांग्लादेश पीछे हट गये और समिट स्थगित कर देनी पड़ी। प्रधानमंत्री अब्बासी ने बयान दिया कि आतंकवाद की वजह से पाकिस्तान को अलग-थलग करने की कोशिश की जाती रही है। मगर, सच यह है कि हमारा देश आतंकवाद का शिकार होता रहा है। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने पाकिस्तान के इस घड़ियाली आंसू से जिस तरह इत्तेफाक किया, उससे यही लग रहा है, जैसे वह पाक खेमे में खड़े हों। नेपाल दक्षेस का मौजूदा अध्यक्ष देश है, मगर ओली जिस तरह का चक्रव्यूह रचने में लग गये हैं, उससे दक्षेस का भला होगा, ऐसा नहीं लगता। काठमांडो को इस समय 'कश्मीर समर्थकों का एपीसेंटर' बनाने का प्रयास चल रहा है। पिछले महीने 5 फरवरी 2018 को काठमांडो में कश्मीर एकता दिवस मनाया गया था। पाक दूत मज़हर जावेद ने जिन लोगों को आयोजन में बुलाया था, उसमें नेपाल सत्ता प्रतिष्ठान से लेकर राजनीतिक दलों के नेता तक थे। ज़ाहिर है, ऐसे आयोजन में कश्मीर पर कोई भजन नहीं गायेगा, बल्कि जो विष वमन हुआ, उसे नेपाल का विदेश मंत्रालय रोक सकता था। इस आयोजन के ज़रिये उन संकल्पों को तार-तार किया जा रहा था, जिसे नेपाल के पूर्ववर्ती शासन प्रमुखों ने किया था।

नयी पीढ़ी की जरूरतों ने बदला चेहरा

डिजिटल मीडिया जो आप इंटरनेट के जरिये लैपटाप पर और मोबाइल एप्लीकेशन के जरिये देखते हैं, इस मीडिया में बहुत तेजी से बढ़ोतरी हुई है। एक कंसलटेंसी संगठन ई एंड वाई के मुताबिक 2016 से 2020 के बीच डिजिटल मीडिया हर साल करीब पच्चीस प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ेगा। टेलीविजन की रफ्तार इसके मुकाबले बहुत कम रहने वाली है। यानी करीब 9.8 प्रतिशत की दर से हर साल बढ़ेगा। इस अध्ययन के मुताबिक 2020 के अंत में टीवी मीडियम का कुल कारोबार 862 अरब रुपये का होगा और 2020 के अंत में डिजिटल मीडिया का कारोबार कुल 224 अरब रुपये का होगा। पर यह रेडियो से बहुत आगे होगा। रेडियो का कुल कारोबार 2020 के अंत में 34 अरब रुपये का होगा। टीवी के बाद प्रिंट मीडिया का कारोबार सबसे बड़ा होगा-369 अरब रुपये का। पर देखने की बात यह है कि प्रिंट को यहां यानी 369 अरब रुपये तक पहुंचने में कई दशक लगे हैं पर डिजिटल की सारी यात्रा कुछ सालों की है। फिर भी इसने बहुत ही तेज रफ्तार पकड़ी है। 2016 और 2020 के बीच सबसे तेजी से विकसित होने वाला मीडिया डिजिटल मीडिया ही होने वाला है, यह बात मीडिया में कईयों को समझ में आ रही है। इसलिए यह अनायास नहीं है कि लगभग हर अखबार अपने मोबाइल एप्लीकेशन, अपनी वेबसाइटों पर भरपूर काम कर रहा है। अब वेबसाइट और मोबाइल एप्लीकेशन सिर्फ सजावटी और दिखाऊ आइटम नहीं हैं। ये मीडिया रणनीति के केंद्र में हैं। दरअसल डिजिटल अब भविष्य का ही नहीं, वर्तमान का माध्यम है। साल-दर-साल के आंकड़े लें तो भी साफ होता है कि डिजिटल की रफ्तार सबसे ज्यादा है। 2016 के मुकाबले 2017 में डिजिटल की विकास दर 29 प्रतिशत रही है। टेलीविजन 2016 के मुकाबले 2017 में 11 प्रतिशत बढ़ा। रेडियो की विकास दर 6 प्रतिशत रही है। प्रिंट का हाल बहुत अच्छा नहीं रहा। 2016 से 2017 में विकास दर सिर्फ 3 प्रतिशत रही। इस अध्ययन ने साफ किया है कि मुल्क की आबादी का 61 प्रतिशत 35 साल से नीचे का है। यही वह वर्ग है जो मोबाइल में आंखें गड़ाये मिलता है, बसों में, स्टेशनों में, गाड़ियों में, दफ्तरों में। गौरतलब यह है कि बढ़ती हुई जनसंख्या के चलते डिजिटल पर मीडिया को देखने वालों की तादाद बढ़ेगी। आप देख सकते हैं कि बच्चे मोबाइल को पकड़ने में बहुत दिलचस्पी दिखाते हैं। कई बच्चों को मोबाइल के बारे में ज्ञान अपने पापा और मम्मी के मुकाबले ज्यादा होता है। यह पीढ़ी डिजिटल पीढ़ी होने वाली है। यह पीढ़ी अखबार कागज पर नहीं, मोबाइल पर पढ़ने वाली है।

जीवन का दर्शन

ललित नगरी के महाराज सारंग देव अपने मंत्री की ज्ञान चेतना से कुपित थे। मंत्री के जन्मदिन समारोह के दिन जब खुशी से सब झूम रहे थे तभी सैनिक राजा का सन्देश लेकर पहुंचे और बोले कि आज शाम को मंत्री को फांसी दी जायेगी। यह सुनकर समारोह में उदासी छा गयी। मित्र, संबंधी रोने लगे। मंत्री समाचार सुनकर भी बैठे संगीत-नृत्य का आनंद ले रहे थे। सैनिकों ने पुन: राजा का सन्देश सुनाया तो मंत्री ने सैनिकों से कहा कि राजा को मेरी ओर से धन्यवाद देना कि कम से कम मृत्यु से पहले आनंद मनाने के लिए कई घंटे शेष हैं। हम अब अपनी मौत पर खुशी मना सकते हैं। यह सब कहकर मंत्री नाचने लगा। सैनिक यह सब देखकर राजा के पास पहुंचे। सैनिकों ने राजा को बताया कि यह सुनकर मंत्री खुशी से झूम उठे और आपको धन्यवाद देने को कहा है। सारंग देव सच जानने के लिए मंत्री के घर पहुंचे। देखा कि मंत्री नाच रहा था, गा रहा था। राजा को देख मंत्री ने राजा को धन्यवाद दिया। राजा बोला-जब तुम मौत से व्यथित ही नहीं, इसलिए अब फांसी देना बेकार है।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. भारत का एक पड़ोसी देश 4. जगन्नाथ, संसार के स्वामी, परमेश्वर 6. थामने की क्रिया, रोककर रखने की शक्ति 8. धनुष, सैन्य टुकड़ी 9. स्वदेश, मातृभूमि 10. माप, मापने की क्रिया 11. बगीचे की देख-रेख करने वाला, बागबान, माला बनाने व बेचने वाली एक जाति, आर्थिक 12. दानी होने का भाव 14. लाभ, फायदा 15. रक्त, लहू, वध 16. चालीस किलोग्राम की तौल, अंत:करण 17. सोचना, विचार करना 19. प्रतीति, विश्वास 20. टकराव, मुड़भेड़ 21. पांच से छोटी एक विषम संख्या 22. नर्म, मुलायम।

ऊपर से नीचे

1. रंगमंच के पर्दे के पीछे की जगह, वेशभूषा, रंगशाला 2. पवित्र, निर्मल, भोजन पकाने की क्रिया, रसोई 3. बाल्यावस्था, लड़कों सा आचार व्यवहार 4. संसार, दुनिया, जगत 5. हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्यौहार 7. तुरत-फुरत, बात की बात में, तुरंत 10. अबोध, मूर्ख 11. मां, जननी 13. सूनसान, उजाड़, जनहीन 14. खारा, नमक के स्वाद जैसा 15. शुष्क हृदय, मूर्ख 17. मृत्यु को प्राप्त होना 18. नया, नव 19. अनाथ, बेसहारा।

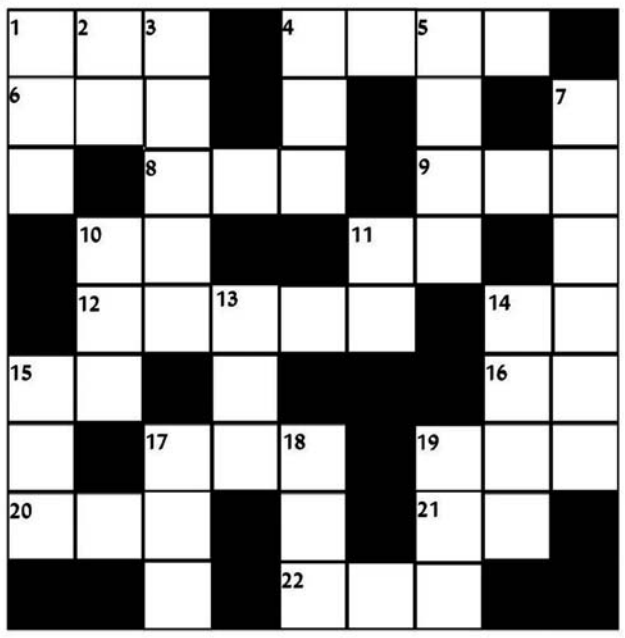

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 45 का हल

मु	हा	व	रा	■	त	क	ली	फ
ज	■	र	ज	नी	श	■	प	ल
रा	व	ण	■	■	री	झ	ना	■
■	ह	■	■	स	फ	र	■	न
■	म	हा	रा	जा	■	ना	य	क
वि	■	र	■	या	न	■	■	च
प्र	भु	■	को	फ्ता	■	■	क	ढ़ा
■	जं	■	■	■	प्या	■	य	■
अ	ग	र	म	ग	र	क	र	ना

सू-दोकू

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.45 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

राशिफल

मेष- आज का दिन महत्वाकांक्षी प्रकृति वालों के लिए शुभ फलदायक रहेगा।

वृष- आज कार्यक्षेत्र में अधिकारी से या व्यवसाय क्षेत्र में व्यापारी से अनबन हो सकती है।

मिथुन- आज का दिन आपके लिए लाभकारक है। कार्य-व्यवहार से जुड़े सभी विवाद आज सुलझ सकते हैं।

कर्क- जीवनसाथी एवं व्यापार में साझीदारों का सहयोग मिलेगा। नौकरी पेशा वर्ग को उन्नति मिल सकती है।

सिंह- आज आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होकर, धन, सम्मान, यश-कीर्ति की वृद्धि होगी।

कन्या- समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। उत्तरदायित्व बढ़ने से कुछ असहज स्थिति उत्पन्न हो सकती है, घबराएं नहीं।

तुला- जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। व्यावसायिक प्रयास फलीभूत होंगे।

वृश्चिक- ऑफिस में आपके अधिकारों में वृद्धि होने के कारण साथियों का मूड कुछ खराब हो सकता है। पूर्ण विचार करके ही कोई निर्णय लेवे।

धनु- आज व्यावसायिक क्षेत्र में मन के अनुकूल लाभ होने का हर्ष होगा। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी।

मकर- आज किसी नई डील से अचानक धन का लाभ होगा। घर में पत्नी या किसी संतान की अचानक तबीयत खराब होने से टेंशन हो सकती है।

कुंभ- बड़ी मात्रा में रूपया हाथ में आने से संतोष होगा। किसी संपत्ति के खरीद-फरोख्त के समय उसके पूर्व संपत्ति के सारे पहलुओं पर गंभीरता से विचार कर लें।

मीन- जिन यंगस्टर्स ने अभी अपने करियर की शुरूआत की है, उन्हें आज अपने ऑफिस में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।